23

मनुष्य-पर्यावरण अंतःक्रिया

पर्यावरण एक विशाल संप्रत्यय है। वह सब कुछ जो हमारे जीवन को प्रभावित करता है संपूर्णता में पर्यावरण जाना जाता है। मानव प्राणी के नाते बहुधा हम अपने चारों ओर की परिस्थितियों के मनुष्यों और अन्य प्राणियों पर प्रभाव के प्रति चिंतित होते हैं। आज समस्त विश्व में पर्यावरण के गुणात्मक ह्रास के प्रति चिंता व्याप्त है और पर्यावरण की विस्तत क्षति को रोकने और उसकी गुणात्मक उन्नति के प्रयास किये जा रहे हैं।

पर्यावरण के प्रति चिंता के परिणामस्वरूप विश्व के समस्त राष्ट्राध्यक्षों की प्रथम बैठक 'अर्थसमिट' पर (औपचारिक रूप से 'यूनाइटेड नेशंस कांफ्रेंस ऑन एनवाइरनमेंट एण्ड डेवलपमेंट (यू.एन.सी.ई.डी) नाम से प्रचलित 1992 में रिओडिजैनेरिओ में संपनन हुई थी। इस बैठक में अपने पर्यावरण के प्रति विश्वव्यापी चिंता व्यक्त की गई। अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम इसी 1992 के सम्मेलन के परिणाम की उपलब्धि है और समाज के सभी वर्ग के लोगों को पर्यावरणीय चिंता के बारे में विश्वव्यापी शिक्षण के प्रयास किये जा रहे हैं। हम जिस पर्यावरण में रहते और कार्य करते हैं वह हमारे विचारों, भावनाओं और व्यवहार को प्रभावित करता है। मनुष्य और पर्यावरण का संबंध द्विपक्षीय है। अर्थात् मनुष्य पर्यावरण से प्रभावित होते हैं और वे भी पर्यावरण को प्रभावित करते हैं। पर्यावरण मनोविज्ञान का अध्ययन इसी अंतःक्रिया पर बल देता है। इस पाठ में हम मनुष्य और पर्यावरण की अंतःक्रिया के विभिन्न पक्षों के बारे में पढ़ेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप समर्थ होंगेः

- पर्यावरण के संप्रत्यय को स्पष्ट करने में,
- मनुष्य और पर्यावरण की अंतःक्रिया के विभिन्न पक्षों का वर्णन करने में,

टिप्पणी

- मनुष्य पर पर्यावरण के प्रभाव को स्पष्ट करने में,
- मनुष्य के व्यवहार का पर्यावरण पर प्रभाव बताने में, और
- पर्यावरण पर भावी खतरों का वर्णन करने में।

23.1 मनुष्य-पर्यावरण अंतःक्रिया

हम जानते हैं कि भौतिक पर्यावरण हमारे व्यवहार को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए, ऐसा देखा गया है कि ठंडे मौसम की अपेक्षा गर्म और उमस भरे मौसम में लोग चिड़चिड़े और आक्रमक हो जाते हैं। गर्मी के महीनों में मार्ग हिंसा के बारे मैं दैनिक समाचार पत्रों में आपने अवश्य पढ़ा होगा। पर्यावरण की ऐसी परिवर्तनशीलता में हमारी रूचि ने पर्यावरण मनोविज्ञान के क्षेत्र का विकास किया।

मनोविज्ञान को यह क्षेत्र मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं और भौतिक पर्यावरण–दोनों प्राकतिक एवं मानवकत–के मध्य परस्परिक संबंधों के अध्ययन के लिए समर्पित है। पारस्परिक संबंध द्विमार्गी प्रक्रिया से कार्य करता है जिसमें पर्यावरण मानव व्यवहार पर प्रभाव डालता है और मनुष्य पर्यावरण को प्रभावित करता है। इस अंतःक्रिया के विभिन्न पक्षों को समझने के लिए पर्यावरण के विभिन्न प्रकारों, जिनका हम सामना करते हैं; को समझना उपयोगी होगा। पर्यावरण के विभिन्न प्रकारों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है:

भौतिक पर्यावरण : इसके अंतर्गत भौतिक यथार्थ और समाज–सांस्कतिक परिदश्य, जो हमारे चारों ओर रहता है, आते हैं। शोरगुल, तापक्रम, जल और वायु के गुण और विभिन्न पदार्थ और वस्तुयें हमें चारों ओर से घेरने वाला भौतिक जगत बनाते हैं।

सामाजिक एवं सांस्कतिक पर्यावरण : इसके अंतर्गत सामाजिक अंतःक्रिया के पक्ष और उनके उत्पाद आते हैं जैसे विश्वास, धारणायें, रूढ़ियाँ इत्यादि। इसमें पर्यावरण के भौतिक और अभौतिक पक्ष शामिल रहते हैं।

मनोवैज्ञानिक पर्यावरण : इसके अंतर्गत पर्यावरण के किसी समुच्चय से संबंधित प्रत्यक्षीकरण और अनुभव आते हैं। कुछ पर्यावरण उत्तेजक हो सकते हैं जबकि दूसरे शिथिल और उबाऊ। मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति बहुधा संगठनात्मक संदर्भ में प्रयोग होती है।

पर्यावरण का विषय अन्य अनेक विषयों के लिए प्रासंगिक है, जैसे भूगोल, वास्तुशिल्प, नगरीय नियोजन आदि। वास्तव में इसकी प्रकति बहुविषयक है। इसे पर्यावरण विज्ञान के रूप में जाना जाता है।

मनुष्य–पर्यावरण अंतःक्रिया के पाँच प्रमुख अवयव हैं। इन अवयवों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है:

1. **भौतिक पर्यावरण:** इसमें प्राकतिक पर्यावरण के पक्ष आते हैं, जैसे जलवायु, भूभाग की विशेषतायें, तापमान, वर्षा, वनस्पति, पशु–पक्षी आदि।

2. **सामाजिक एवं सांस्कतिक पर्यावरणः** इसके अंतर्गत सांस्कतिक पर्यावरण के सभी पक्ष आते हैं जैसे, मानबिंदु, रीति–रिवाज, समाजीकरण की प्रक्रिया आदि। इसमें दूसरे लोगों से संपर्क और उनकी कतियाँ आते हैं।

3. **पर्यावरणीय दिशा-निर्देशनः** यह अपने पर्यावरण के बारे में लोगों के विश्वास का संकेत करता है। उदाहरण के लिए कुछ लोग पर्यावरण को भगवान के समान मानते हैं और इसीलिए वे इसके हर पक्ष को बड़े ही सम्मान से देखते हैं और उसे पूर्णरूप से बनाये रखने का प्रयास करते हैं तथा उसे प्रदूषित नहीं होने देते।

4. **पर्यावरणीय व्यवहारः** यह लोगों की सामाजिक अंतःक्रिया के दौरान पर्यावरण के प्रयोग की ओर संकेत करता है। उदाहरण के लिए व्यक्ति जब अपनी पहचान पर्यावरण से करता है तो पर्यावरण को व्यक्तिगत स्थान मानता है।

5. **व्यवहार के उत्पादः** इसमें लोगों के कार्यों के परिणाम आते हैं जैसे घर, नगर, बाँध, स्कूल आदि। इस प्रकार ये पर्यावरण के साथ व्यवहार के उत्पाद या परिणाम हैं।

पर्यावरण के उपर्युक्त सभी पक्ष पर्यावरण और मनुष्य के मध्य अंतःक्रिया के अध्ययन के महत्वपूर्ण अवयवों को चित्रित करते हैं। यह जानना बहुत महत्वपूर्ण है कि मनुष्य पर्यावरण का एक अंग है और पर्यावरण को प्रदूषित करने का परिणाम मनुष्य और अन्य प्राणियों का लुप्त होना होगा। इसीलिए पर्यावरण को सुव्यवस्थित रखना मनुष्य का मुख्य दायित्व है क्योंकि इसके विनाश का अर्थ मानव जीवन का विनाश है।

पाठगत प्रश्न 23.1

निम्नलिखित वाक्यों को एक शब्द दीजिये :

1. सामाजिक अंतःक्रिया के दौरान लोगों द्वारा पर्यावरण का प्रयोग————————।
2. लोगों के कार्यों का परिणाम जैसे बाँध, स्कूल और मकान ————————।
3. पर्यावरण के बारे में लोगों का विश्वास ————————।
4. संस्कति के सभी पक्ष ————————।
5. प्राकतिक पर्यावरण के पक्ष ————————।

23.2 भौतिक बनाम मनोवैज्ञानिक पर्यावरण

भौतिक और मनोवैज्ञानिक पर्यावरण के बीच के अंतर को समझना महत्वपूर्ण है। भौतिक वातावरण वह है जो बाहर भौतिक रूप से दिखाई देता है, जैसे मकान, पेड़, पहाड़ आदि।

दूसरी ओर मनोवैज्ञानिक पर्यावरण वह है जो लोगों के मन में रहता है। भौतिक पर्यावरण से इसका कुछ संबंध हो सकता है और नहीं भी हो सकता है। उदाहरण के लिए आप सागर तट पर बैठे हैं, जहाँ भौतिक रूप से जहाज, नौकायें, खाड़ी और सागर की लहरें (ये सभी भौतिक पर्यावरण बनाती हैं) आदि आपके सामने हैं; फिर भी वहाँ बैठे होने पर भी जो कुछ आपके सामने है उसके बारे में आप सचेत न हों और आप कुछ और सोच रहे हों। उपस्थित भौतिक पर्यावरण आपको प्रभावित नहीं कर रहा है। यही वह मनोवैज्ञानिक पर्यावरण है।

कुर्ट लिवीन, एक जर्मन मनोवैज्ञानिक ने भौतिक और मनोवैज्ञानिक पर्यावरण में अंतर किया। लिवीन ने व्यक्ति और पर्यावरण के मध्य संबंध को स्पष्ट करने के लिए 'लाइफ स्पेस' का संप्रत्यय प्रस्तुत किया। लिवीन के अनुसार, लाइफ स्पेस संपूर्ण मनोवैज्ञानिक यथार्थ है जो एक व्यक्ति के व्यवहार को निश्चित करता है। लाइफ स्पेस के अंतर्गत पर्यावरण में उपस्थित प्रत्येक वस्तु आती है जो व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करती है। पर्यावरण व्यक्ति के बाहर की हर वस्तु को समाहित करता है। जिसमें भौतिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक पक्ष आते हैं। लिवीन पर्यावरण में व्यक्ति को लाइफ स्पेस कहता है। गणितीय ढंग से लाइफ स्पेस को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है: (B= Behaviour व्यवहार; f=Foreign hull भौतिक पर्यावरण जो प्रत्यक्ष रूप से व्यवहार को प्रभावित नहीं करता; L= Life Space लाइफ स्पेश; P = person व्यक्ति; E= Environment पर्यावरण)

$$B= f(L) = f(P.E.)$$

इसका आशय है कि एक निश्चित समय पर किसी व्यक्ति का व्यवहार लाइफ स्पेस का एक कार्य है। इसके अंतर्गत व्यक्ति और पर्यावरण, लाइफ स्पेस में पर्यावरण व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करता है और दूसरा भौतिक पर्यावरण जो व्यवहार को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित नहीं करता उसे फारेन हल (Foreign hull) कहते हैं। किसी दूसरे समय पर, घटनायें या पदार्थ व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित कर सकते हैं, उस स्थिति में व्यवहार को प्रभावित करने वाला फारेन हल का भाग पर्यावरण का भाग हो जाता है और पर्यावरण विस्तत होकर फारेन हल के कुछ भाग को समाहित कर लेता है।

23.3 मनुष्य के व्यवहार पर पर्यावरण के प्रभाव

हम पहले चर्चा कर चुके हैं कि पर्यावरण मनुष्य के व्यवहार को प्रभावित करता है और मनुष्य का व्यवहार पर्यावरण को प्रभावित करता है। पर्यावरण मानव प्राणियों पर पोषक एवं विनाशक दोनों प्रकार का प्रभाव डालता है।

संपूर्ण मानव इतिहास में लोग बाढ़, भूकंप और अन्य प्राकतिक आपदाओं से पीड़ित रहे हैं। विज्ञान के विशद विकास के बावजूद हम प्राकतिक भयावह घटनाओं के प्रभाव पर

नियंत्रण पाने में समर्थ नहीं हो पाये हैं और न ही प्राकतिक आपदाओं पर नियंत्रण पा सके हैं। इधर के समय में प्रौद्योगिकी नवाचारों और उन्नति ने हमारे लिये पर्यावरण के संभावित नये खतरे पैदा कर दिये हैं, जो मानवकत हैं। ये खतरे भौतिक दष्टि से हानिकारक और तनावपूर्ण हैं। लोगों को इन तनाव पैदा करने वाले कारकों का सामना करना है। ऐसे मानवकत तनाव पैदा करने वाले अनेक कारक हैं। ये तनाव पैदा करने वाले कारक प्रदूषक पदार्थ कहलाते हैं और मूलरूप से ये चार होते हैंः वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, और भीड़।

हम अनेक प्राकतिक आपदायें पाते हैं जो मनुष्य के व्यवहार को अनेक प्रकार से प्रभावित करती हैं। इन प्राकतिक आपदाओं में भूकंप, ज्वालामुखी फटना, तूफान, बवंडर, चक्रवात, दुर्भिक्ष, बाढ़ आदि आते हैं। लाटूर और भुज के भूकंप (2001) और उड़ीसा का बहत चक्रवात (1999) ने केवल संपत्ति और भौतिक पर्यावरण को भीषण क्षति नहीं पहुँचाई किंतु लोगों के जीवन पर भी उनका दीर्घकालिक प्रभाव पड़ा था।

बहुत सी मानव कत आपदायें भी होती हैं। प्रौद्योगिकी की आपदायें जैसे थ्रीमाइल आइलैंड (Three Mile Island, 1979), के केर्नोबिल (Chernobyl), 1986 और भोपाल मेथी आइसोसाइनाइड (Bhopal Methy Iso Cynide- MIC), आपदा, (1984) आदि कुछ प्रमुख मानवकत आपदायें हैं। मानव जीवन पर जिनका गहन और दीर्घकालिक प्रभाव पड़ा है। भोपाल की दुर्घटना में आठ हजार से अधिक लोगो की मत्यु हुई और दो लाख से अधिक लोग शारीरिक दष्टि से प्रभावित हुये। गैस त्रासदी के शिकार हजारों लोग आज भी मानसिक और शारीरिक समस्याओं से पीड़ित हैं। शोध अध्ययनों से पता चलता है कि ऐसी आपदाओं में बचे हुए लोग चिंता, पलायन, अवसाद, तनाव, क्रोध, डरावने सपनों से पीड़ित रहते हैं।

23.4 मानवीय व्यवहार का पर्यावरण पर प्रभाव

जैसा पहले बताया जा चुका है कि मनुष्य के क्रियाकलाप भी पर्यावरण को प्रभावित करते हैं। वास्तव में, लगभग प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्रियाओं द्वारा पर्यावरण को जिसमें वह रहता है सकारात्मक और निषेधात्मक रूप से प्रभावित करता है। जब भी कोई स्कूटर, मोटर साइकिल या कार चलाता है, स्प्रे प्रयोग करता है, खाना बनाता है आदि तो पर्यावरण प्रभावित होता है। अपनी क्रियाओं द्वारा पर्यावरण के क्षय को हम प्रत्यक्ष देख नहीं पाते। कल्पना कीजिये अपने ग्रह पर रहने वाले असंख्य लोग किसी न किसी तरह से पर्यावरण पर प्रभाव डालते हैं और उसका संचित प्रभाव कितना विशद होगा। मानवीय क्रियाओं का पर्यावरण पर दीर्घकालिक प्रभाव आने वाली पीढ़ियों के जीवन को भी प्रभावित करेगा।

सौभाग्य से अपने पर्यावरण से विनाश लीला करने बाद समस्त विश्व के लोग मानवकत इस आपदा के बारे में सजग हो गए हैं। अब आपदा के दुष्परिणामों को नियंत्रित करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

टिप्पणी

23.5 भविष्य की योजना

जैसा पहले बताया जा चुका है कि राष्ट्र संघ गंभीरता से विश्वभर में पर्यावरण को हानि पहुँचाने वाली लोगों की क्रियाओं पर नियंत्रण पाने के लिए कार्य कर रहा है। पर्यावरण कुछ सीमाओं के साथ प्रकति दत्त संपत्ति है हमें उसका औचित्यपूर्ण प्रयोग करना सीखना है। हवा, पानी, भोजन, ईंधन आदि सभी मनुष्य को दिये गये वरदान हैं और हमें उनका न्यायपूर्ण प्रयोग एवं उनका संरक्षण करना सीखना है हमें पानी और हवा को संरक्षित रखने पर अधिक ध्यान देना है। निरर्थक पदार्थ, कचरा आदि को नाली में बहता मल और कूड़ा फेंकने पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

पानीः हम प्राकतिक संसाधनों का प्रयोग करते हैं पर उनकी पूर्ति नहीं कर पाते, और पानी एक ऐसा ही संसाधन है। हमारे ग्रह पर आज कम से कम 80 देशों में पानी की गंभीर कमी है जो खेती के लिए एक गंभीर खतरा है। इन देशों में भारत भी है जहाँ पानी की कमी खेती को बुरी तरह प्रभावित कर रही है। कर्नाटक और तमिलनाडु में पानी की कमी एक उदाहरण है। महानगरों में भी पानी की कमी एक गंभीर खतरा है। उदाहरण के लिए गर्मी के दिनों में दिल्ली क्षेत्र में पानी की अधिक कमी होती है और आस–पास के नगरों से आने वाली आबादी के कारण यह कमी दिन पर दिन बढ़ती ही जा रही है। इसका समाधान वर्षा के पानी के एकत्रीकरण में है और वर्षा के पानी को बढ़ी पानी की आवश्यकता की आपूर्ति के लिए प्रयोग किये जाने के प्रयास किये जा रहे हैं।

हवाः हवा के गुण को मोटर वाहनों और औद्योगिक निस्सारित पदार्थों ने बुरी तरह प्रभावित किया है। इन साधनों से निस्सरित कार्बन मोनोऑक्साइड, नाइट्रोजन डाइऑक्साइड, सफल्र डाईऑक्साइड आदि जहरीली गैस हवा में मिल रही हैं जिन्हें हम अपनी सांस में लेते हैं जन स्वास्थ्य की रक्षा के लिए इस सड़न को रोकने के गंभीर प्रयास करने की आवश्यकता है। इस दिशा में दिल्ली प्रशासन ने सीएनजी का प्रयोग करके एक कदम उठाया है। इसे जनयातायात में प्रयोग किया जा रहा है जिससे दिल्ली में हवा में गुणात्मक अंतर आया है। ऐसे ही नवाचार बड़ी मात्रा में हवा की गुणवत्ता बनाये रखने के लिए आवश्यक हैं।

निरर्थक पदार्थः संभवतः मानवीय क्रियाओं का सबसे अधिक प्रकट मानवकत उत्पाद निरर्थक पदार्थ है। इस निरर्थक पदार्थ में नाली में बहता मल और कचरा आते हैं। इनका प्रबंधन स्थानीय प्रशासन, नगर पालिका और महानगर निगम के लिए एक गंभीर समस्या है। और अभी तक नाली में बहते हुए मल को बिना समाधान के नदियों में गिरा दिया जाता है। इसने जल प्रदूषण की समस्या को गंभीर बना दिया है। यह नदियों के पानी को मनुष्य के उपयोग के योग्य नहीं रहने देता। अब इस गंभीर समस्या के प्रति जागरूकता पैदा हुई है और नाली के मल को पूर्व संशोधित किये बिना नदियों या सागर में न गिराया जाये इसके प्रयास किये जा रहे हैं।

जिस कचरे का उत्पाद हम अत्याधिक मात्रा में करते हैं उससे एक और भीषण समस्या पैदा होती है। कचरे का निस्तारण विशेषकर न गलने वाले पदार्थ जैसे प्लास्टिक के थैले एक गंभीर समस्या है। हमें दैनिक जीवन में प्लास्टिक बैग के प्रयोग में सावधानी बरतनी चाहिए। धरती को ऐसे निरर्थक पदार्थ के प्रभाव से होने वाले प्रदूषण से बचाने के लिए प्रयुक्त वस्तुओं से फिर से वस्तुयें बनाने का कार्य प्रारंभ करना चाहिए।

पाठगत प्रश्न 23.2

1. पानी की कमी को दूर करने के लिए कोई एक सुझाव दीजिये।

   ——————————————————————————————

2. वायु के प्रदूषण को कम करने के लिए क्या करना चाहिये?

   ——————————————————————————————

3. निरर्थक (काम न आने वाला) पदार्थ के समाधान के लिए सुझाव दीजिये।

   ——————————————————————————————

आपने क्या सीखा

- पर्यावरण के दो भाग होते हैं : भौतिक (जैसे ध्वनि, ताप, हवा, पानी आदि) और मनोवैज्ञानिक पर्यावरण (व्यक्ति द्वारा पर्यावरण का प्रत्यक्षीकरण एवं अनुभव)
- मानवीय व्यवहार व्यक्ति और पर्यावरण के मध्य अंतःक्रिया का परिणाम होता है।
- पर्यावरणीय परिवर्तन, प्राकतिक जैसे भूकंप, सुनामी आदि और मानवकत जैसे भोपाल एमआईसी त्रासदी दोनों मानव व्यवहार को प्रभावित करते हैं।
- मनुष्य भी अपने क्रिया–कलापों जैसे कार चलाना, खाना बनाना आदि द्वारा पर्यावरण को प्रभावित करता है।
- पर्यावरण की रक्षा के लिए प्रभावी तकनीक विकसित करने की आवश्यकता है।

पाठांत अभ्यास

1. मनुष्य–पर्यावरण अंतःक्रिया के कौन–कौन से पहलू हैं? मानव व्यवहार पर पर्यावरणीय प्रभाव को स्पष्ट कीजिये।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

23.1

1. पर्यावरणीय व्यवहार
2. व्यवहार के उत्पाद
3. पर्यावरणीय दिशा–निर्देशन
4. सामाजिक–सांस्कतिक पर्यावरण
5. भौतिक पर्यावरण

23.2

1. वर्षा के जल का एकत्रीकरण
2. सीएनजी का प्रचलन
3. नाली के मल का पूर्व संसाधन और कचरे का चक्रीकरण

पाठांत अभ्यास के लिए संकेत

1. संदर्भ 23.1 और 23.3
2. संदर्भ 23.4 और 23.5